सूरह — एक कहानी

सूरह 'अबस

वो त्योरी चढ़ा

पूरा सफ़र — वो नाबीना जिसने दुनिया को सिखाया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 80 • 42 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

'अबस व तवल्ला। अन जा-अहुल्-अ'मा
1-2. वो त्योरी चढ़ा और मुँह फेरा, क्योंकि उसके पास नाबीना आ गया।

व मा युद्रीक ल'अल्लहू यज़्ज़क्का
3. और आप क्या जानें, शायद वो पाक हो जाता।

कल्ला इन्नहा तज़्किरह
11. हरगिज़ नहीं! बेशक ये एक नसीहत है।

फ़ल्-यन्ज़ुरिल्-इंसानु इला त'आमिह
24. तो इंसान अपने खाने की तरफ़ देखे।

यौम यफ़िर्रुल्-मर्उ मिन अख़ीह
34. जिस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा।

वुजूहुंय्-यौम-इज़िम्-मुस्फ़िरह। ज़ाहिकतुम्-मुस्तब्शिरह
38-39. उस दिन कुछ चेहरे रौशन होंगे, हँसते हुए, ख़ुशख़बरी पर शादमान।

एक त्योरी जो हमेशा के लिए लिख दी गई

बेटा, आज की सूरह एक ऐसे वाक़िए से शुरू होती है जो इतना असाधारण है कि वो ख़ुद ब ख़ुद इस बात की सबसे मज़बूत दलीलों में से एक है कि क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से है।

नबी ﷺ एक निहायत अहम गुफ़्तगू के बीच में थे। आपके सामने क़ुरैश के सरदार बैठे थे — 'उत्बा, शैबा, अबू जहल, उमय्या जैसे लोग — वही क़यादत जिनके इस्लाम क़ुबूल करने से पूरे पैग़ाम के लिए मक्का के दरवाज़े खुल सकते थे। आप ﷺ उनके सामने पूरी उम्मीद और फ़िक्र के साथ इस्लाम पेश कर रहे थे।

और उस मुलाक़ात के बीच में, एक ग़रीब नाबीना सहाबी — अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि0) — अंदर आए, ये देखे बग़ैर कि कौन मौजूद है, और पुकार उठे: या रसूलल्लाह, मुझे वो सिखाइए जो अल्लाह ने आपको सिखाया!

उन्होंने इसे दोहराया, गुफ़्तगू में ख़लल डालते हुए। और नबी ﷺ — ये चाहते हुए कि सरदारों के साथ ये क़ीमती मौक़ा हाथ से न निकल जाए — ने एक बिल्कुल इंसानी काम किया: आपने हल्का सा त्योरी चढ़ाया, अपना चेहरा फेर लिया, और सरदारों के साथ बात जारी रखी।

और सातों आसमानों के ऊपर से वही नाज़िल हुई — किसी जंग के बारे में नहीं, किसी क़ानून के बारे में नहीं, बल्कि उस त्योरी के बारे में: "अबस व तवल्ला — वो त्योरी चढ़ा और मुँह फेरा — अन जा-अहुल्-अ'मा — क्योंकि उसके पास नाबीना आ गया।'

बेटा, यहाँ रुक जाइए। ग़ौर कीजिए कि अल्लाह अपने महबूब की इस्लाह किस नरमी से करते हैं: वो ये नहीं कहते 'आपने त्योरी चढ़ाया' — वो तीसरे सीग़े में कहते हैं, 'वो त्योरी चढ़ा', गोया सीधे ख़िताब से पहले बात को नरम कर रहे हों। और फिर: 'व मा युद्रीक ल'अल्लहू यज़्ज़क्का — और आप क्या जानें — शायद वो पाक हो जाता — औ यज़्ज़क्करु फ़-तन्फ़'अहुज़्-ज़िक्रा — या नसीहत क़ुबूल करता, और नसीहत उसे फ़ायदा देती?'

फिर अल्लाह वो तज़ाद बयान करते हैं जिसे सिखाने के लिए ये सूरह मौजूद है: 'अम्मा मनिस्-तग़ना — रहा वो जो ख़ुद को बे-नियाज़ समझता है — फ़-अन्त लहू तसद्दा — तो आप उसकी तरफ़ तवज्जोह देते हैं! व मा 'अलैक अल्ला यज़्ज़क्का — हालाँकि अगर वो पाक न हो तो आप पर कुछ नहीं। व अम्मा मन जा-अक यस्'आ — और रहा वो जो आपके पास दौड़ कर आया — व हुव यख़्शा — और वो अल्लाह से डरता है — फ़-अन्त 'अन्हु तलह्हा — उस से आप बे-ध्यान हो जाते हैं।'

इस्लाह के अंदर छुपी दलील

बेटा, अब सोचिए ये सूरह है क्या। यहाँ एक शख़्स नुबुव्वत का दावा कर रहा है। अगर वो इस किताब को ख़ुद गढ़ रहा होता, तो क्या वो अपनी ही किताब में — जिसे हर पैरोकार क़ियामत तक नमाज़ में पढ़ेगा — अपने ही त्योरी की सर-ए-आम इस्लाह शाया करता? क्या कोई जाली बनाने वाला अपनी ही ग़लती उस दस्तावेज़ में लिखता जो उसका इक़्तिदार क़ाइम करने के लिए हो?

बेटा, नहीं। जो अपनी छवि चमकाता है वो ऐसे लम्हे छुपाता है। इस किताब ने इसे महफ़ूज़ रखा। यही उस भेजने वाले के दस्तख़त हैं जो रसूल से ऊपर है।

और देखिए नबी ﷺ ने उसके बाद क्या किया, और यही असल सबक़ है। आपने अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि0) से कोई रंजिश नहीं रखी — आपने बाक़ी ज़िंदगी उनकी इज़्ज़त की। जब भी आप उनसे मिलते, उनका इस्तिक़बाल इन अल्फ़ाज़ से करते: 'ख़ुश-आमदीद उस शख़्स को जिसकी वजह से मेरे रब ने मेरी इस्लाह फ़रमाई!' आप उनके बैठने के लिए अपनी चादर बिछा देते। और जब आप ﷺ सफ़र पर जाते तो इस नाबीना को एक से ज़्यादा बार मदीना पर अपना नायब मुक़र्रर फ़रमाया — वो शहर उस शख़्स की निगरानी में छोड़ दिया जिसे कभी आपने मुँह फेर कर छोड़ा था।

बेटा, एक अज़ीम रूह इस्लाह को यूँ क़ुबूल करती है: दिफ़ाई अंदाज़ से नहीं, शर्मिंदगी को दूरी में बदल कर नहीं — बल्कि उस शख़्स को बुलंद कर के जो उसका सबब बना।

और जो उसूल अल्लाह ने यहाँ क़ाइम किया वो उम्मत पर हमेशा के लिए हाकिम है: इल्म का एक मुख़्लिस तालिब — चाहे कितना ही ग़रीब हो, कितना ही मा'ज़ूर, दुनिया की नज़र में कितना ही बे-हैसियत — आपकी तवज्जोह पर उस अमीर से ज़्यादा हक़ रखता है जो कोई ज़रूरत महसूस ही नहीं करता। अपनी महफ़िलों पर नज़र डालिए, बेटा: अगली सीट, गर्मजोशी वाला मुसाफ़ा, एक्स्ट्रा मिनट — किसे मिलते हैं? ये सूरह हम सब का हिसाब-किताब लेती है।

बा-इज़्ज़त सफ़हों पर लिखा हुआ

फिर अल्लाह गुफ़्तगू को ख़ुद क़ुरआन की तरफ़ बुलंद करते हैं: 'कल्ला इन्नहा तज़्किरह — हरगिज़ नहीं! बेशक ये एक नसीहत है — फ़-मन शा-अ ज़करह — तो जो चाहे इसे याद रखे।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: ये पैग़ाम न उन पर थोपा जाए जो कोई ज़रूरत महसूस नहीं करते, न उन से रोका जाए जो दौड़ कर आते हैं। इसे खुले में रख दिया गया — जो चाहे, ले ले।

'फ़ी सुहुफ़िम्-मुकर्रमह — (लिखा हुआ) बा-इज़्ज़त सफ़हों में — मर्फ़ू'अतिम्-मुतह्हरह — बुलंद और पाक — बि-अयदी सफ़रह — लिखने वालों (फ़रिश्तों) के हाथों से — किरामिम्-बररह — जो इज़्ज़त वाले, फ़रमाँबरदार हैं।'

बेटा, इस इज़्ज़त की ज़ंजीर देखिए जो अल्लाह अपनी किताब के लिए बयान करते हैं: बा-इज़्ज़त सफ़हे, बुलंद किए हुए, पाक रखे गए, इज़्ज़त वाले फ़रमाँबरदार फ़रिश्तों के हाथों उठाए हुए। और फिर इसे पहुँचाया जाता है... एक ऐसी महफ़िल में जहाँ एक अमीर को एक ग़रीब मोमिन पर तरजीह दी जा रही है। यही तज़ाद असल नुक़्ता है। इतनी पाक चीज़ इस लायक़ है कि उससे वैसी ही पाकीज़गी से पेश आया जाए।

अपने खाने की तरफ़ देखो

फिर सूरह इंसान की ना-शुक्री की तरफ़ मुड़ती है, हैरत-अंगेज़ सख़्ती वाले अल्फ़ाज़ के साथ: 'क़ुतिलल्-इंसानु मा अक्फ़रह — इंसान हलाक हो; वो कितना ना-शुक्रा है!'

और फिर अल्लाह एक ऐसा सवाल पूछते हैं जो हर फूली हुई अना की हवा निकाल देता है: 'मिन अय्यि शै-इन ख़लक़ह — उसने उसे किस चीज़ से बनाया? मिन नुत्फ़तिन ख़लक़हू फ़-क़द्दरह — एक बूँद से उसे बनाया और उसका अंदाज़ा मुक़र्रर किया। सुम्म सबील यस्सरह — फिर उसके लिए रास्ता आसान किया। सुम्म अमातहू फ़-अक़्बरह — फिर उसे मौत दी और उसके लिए क़ब्र बनाई।'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि क़ब्र भी एक एहसान के तौर पर गिनवाई गई: 'अक़्बरह' — उसने उसे क़ब्र अता की। अल्लाह ने इंसानी जिस्म की इज़्ज़त इस क़ानून से की कि उसे ज़मीन में ढाँप दिया जाए, न कि किसी जानवर की लाश की तरह खुला छोड़ दिया जाए। मौत में भी आपके लिए इज़्ज़त का इंतिज़ाम किया गया।

'सुम्म इज़ा शा-अ अन्शरह — फिर जब वो चाहेंगे उसे दोबारा ज़िंदा करेंगे। कल्ला लम्मा यक़ि़ज़ मा अमरह — हरगिज़ नहीं! इंसान ने अब तक वो पूरा नहीं किया जिसका उसे हुक्म दिया गया।'

और फिर सूरह क़ुरआन की सबसे ख़ूबसूरत ग़ौर-ओ-फ़िक्र की दावतों में से एक देती

है: 'फ़ल्-यन्ज़ुरिल्-इंसानु इला त'आमिह — तो इंसान अपने खाने की तरफ़ देखे।'

बेटा, अपनी प्लेट की तरफ़ देखिए। आसमान की तरफ़ नहीं, कहकशाओं की तरफ़ नहीं — अपने हाथ की रोटी की तरफ़। 'अन्ना सबब्नल्-मा-अ सब्बा — कि हमने पानी बरसाया, मूसलाधार। सुम्म शक़क़्नल्-अर्ज़ शक़्क़ा — फिर हमने ज़मीन को फाड़ा — फ़-अम्बत्ना फ़ीहा हब्बा — और उसमें अनाज उगाया — व 'इनबंव्-व क़ज़्बा — और अंगूर और तरकारियाँ — व ज़ैतूनंव्-व नख़्ला — और ज़ैतून और खजूर के दरख़्त — व हदाइक़ ग़ुल्बा — और घने दरख़्तों के बाग़ — व फ़ाकिहतंव्-व अब्बा — और फल और चारागाह — मता'अल्-लकुम व लि-अन'आमिकुम — तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए।'

बेटा, इस ज़ंजीर को ट्रेस कीजिए: पानी ऊपर से भेजा गया, मिट्टी नीचे से फाड़ी गई, एक बीज अँधेरे में से ऊपर धकेलता हुआ, धूप, महीनों की नशो-नुमा, एक किसान, धुलाई-तुलाई, एक रसोई, और फिर आपका हाथ उसे मुँह तक उठाता हुआ। इस ज़ंजीर की एक कड़ी भी आपकी नहीं। और अल्लाह फ़रमाते हैं: उसे देखो। खाने से पहले वाक़ई देखो, और खाना ख़ुद इबादत बन जाएगा।

वो दिन जब आदमी अपने भाई से भागेगा

और फिर सूरह उस दिन की तरफ़ बढ़ती है: 'फ़-इज़ा जा-अतिस्-साख़्ख़ह — तो जब कान बहरे कर देने वाली चिंघाड़ आएगी।' साख़्ख़ह, बेटा — एक ऐसी आवाज़ जो इतनी हावी है कि कान बहरे कर दे।

'यौम यफ़िर्रुल्-मर्उ मिन अख़ीह — उस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा — व उम्मिही व अबीह — और अपनी माँ और अपने बाप से — व साहिबतिही व बनीह — और अपनी बीवी और अपनी औलाद से।'

बेटा, इस फ़ेहरिस्त के साथ बैठिए, क्योंकि अल्लाह ने इसे होला देने वाली बारीकी से तरतीब दिया — भाई, माँ, बाप, बीवी, औलाद। ये ठीक वही लोग हैं जिनके लिए हम क़ुर्बानी देते हैं, फ़िक्र करते हैं, गुनाह करते हैं, और जिनके गिर्द अपनी पूरी ज़िंदगी तरतीब देते हैं। और उस दिन, इंसान उन से भागेगा।

उलमा तफ़्सीर करते हैं: वो इसलिए भागेगा कि उसे डर है कि वो उस पर अपना हक़ माँगेंगे, या इसलिए कि वो जानता है कि वो उनकी मदद नहीं कर सकता। और आयत ख़ुद वजह बताती है: 'लि-कुल्लिम्-रि-इम्-मिन्हुम यौम-इज़िन शा'नुंय्-युग़्नीह — उन में से हर शख़्स को उस दिन एक ऐसी फ़िक्र होगी जो उसे मसरूफ़ रखने को काफ़ी होगी।'

बेटा, एक ऐसी माँ का तसव्वुर कीजिए — जो अपने बच्चे के लिए आग में कूद जाए — उस दिन इतनी मसरूफ़ कि उसका हाल पूछने की फ़ुर्सत न हो। यही उस दिन का बोझ है।

और सबक़ ये नहीं कि हम अपने ख़ानदान से कम मोहब्बत करें; ये है कि समझ लें कि मोहब्बत सवाब मुंतक़िल नहीं करती। उनकी ख़िदमत कीजिए, इज़्ज़त कीजिए, उनका इंतिज़ाम कीजिए — मगर उनकी आसाइश कभी अपने हिसाब की क़ीमत पर मत ख़रीदिए।

दो क़िस्म के चेहरे

और सूरह उस दिन मौजूद दो चेहरों को दिखा कर ख़त्म होती है — और बेटा, अगर इस सूरह से और कुछ याद न रहे, तो ये चार आयतें याद रखिए:

'वुजूहुंय्-यौम-इज़िम्-मुस्फ़िरह — उस दिन कुछ चेहरे रौशन होंगे — ज़ाहिकतुम्-मुस्तब्शिरह — हँसते हुए, ख़ुशख़बरी पर शादमान।'

बेटा, हँसते हुए। कान बहरे कर देने वाली चिंघाड़ के दिन, जब माएँ अपने बच्चों से भाग रही होंगी, कुछ लोग ख़ुशी से हँस रहे होंगे — क्योंकि उनका हिसाब अच्छा निकला। उस दिन आप कौन सा चेहरा ले कर जाते हैं, ये इन्हीं आम दिनों में तय हो रहा है।

'व वुजूहुंय्-यौम-इज़िन 'अलैहा ग़बरह — और उस दिन कुछ चेहरों पर गर्द होगी — तर्हक़ुहा क़तरह — उन्हें सियाही ढाँप रही होगी। उलाइक हुमुल्-कफ़रतुल्-फ़जरह — यही लोग मुनकिर हैं, बदकार।'

बेटा, इस सूरह की बनावट शुरू से आख़िर तक देखिए। इसकी इब्तिदा एक बा-इज़्ज़त

चेहरे पर त्योरी से हुई — और इख़्तिताम उन चेहरों पर जो या तो हँस रहे हैं या गर्द में अटे हैं। इसकी शुरुआत एक ग़रीब नाबीना से हुई जो अल्लाह का ख़ौफ़ दिल में लिए दौड़ कर आया था — और इसका अंजाम ये बताने पर होता है कि कौन से चेहरे चमकेंगे।

और यहाँ आख़िरी ख़याल, बेटा: अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि0) इस दुनिया में देख नहीं सकते थे। मगर उन्हीं का चेहरा हिदायत की तरफ़ दौड़ रहा था, जब कि पूरी बीनाई वाले लोग बैठ कर हिसाब लगा रहे थे। उस दिन, आप क्या समझते हैं, किसका चेहरा उन रौशन, हँसते चेहरों में होगा? क़ुरआन पहले ही जवाब दे चुका — और उसने उनका नाम सिर्फ़ 'नाबीना' रखा, ताकि हर पढ़ने वाला, हर सदी में, समझ ले कि अल्लाह का तराज़ू दिलों को तोलता है, आँखों को नहीं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल्लाह का तराज़ू दुनिया का तराज़ू नहीं: एक ग़रीब, नाबीना, मुख़्लिस तालिब उस अमीर से बुलंद है जो कोई ज़रूरत महसूस नहीं करता।

2. क़ुरआन का अपने रसूल ﷺ को एक त्योरी पर टोकना ख़ुद इसकी सच्चाई की दलील है — कोई जाली बनाने वाला अपनी ही मलामत नहीं लिखता।

3. इस्लाह को यूँ क़ुबूल कीजिए जैसे आप ﷺ ने की: उसके सबब बने शख़्स से कतराने के बजाय उसकी इज़्ज़त कीजिए।

4. अपनी महफ़िलों का हिसाब लीजिए: अगली सीट और गर्मजोशी वाला मुसाफ़ा किसे मिलता है?

5. क़ब्र भी एक एहसान है — मौत में भी आपकी इज़्ज़त का इंतिज़ाम किया गया।

6. खाने से पहले अपनी प्लेट को वाक़ई देखिए — उस ज़ंजीर की एक कड़ी भी आपकी नहीं, और खाना ख़ुद इबादत बन जाएगा।

7. मोहब्बत सवाब मुंतक़िल नहीं करती: अपनों की ख़िदमत कीजिए, मगर उनकी आसाइश अपने हिसाब की क़ीमत पर मत ख़रीदिए।

या अल्लाह, हमें उन चेहरों में शामिल फ़रमाइए जो उस दिन रौशन और हँसते होंगे, और हमारे तराज़ू को दिलों से भारी कर दीजिए। आमीन।